International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नारो आर राष्टोय आन्दालन राजस्थान क विशष सन्दभ म

डॉ0 नीलम गौड
प्राचार्य, व्यापार मण्डल कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हनुमानगढ़

परिचयात्मक शोध का परिचय

राज्य के पुरालेख रिकॉर्ड व दस्तावेजों द्वारा रेखांकित किया गया है कि दमनात्मक कार्यवाही के विरोधास्वरूप उसके मन में कैसे चेतना जागृत हुई जिससे इन महिलाओं ने किसान आंदोलन, भील आंदोलन व जागीरदारों की सामन्तशाही के विरूद्ध संघर्ष से लेकर राष्ट्रीय आंदोलन तक अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।राजस्थान देश के इतिहास में वीरता, शौर्य, देशभक्ति व त्याग के लिए विख्यात रहा है, परन्तु उसके द्वारा आजादी के लिए किये गये संघर्ष का विस्तृत एवं विश्वसनीय इतिहास पर्याप्त मात्रा में लिखित नही है।

राजस्थान जहाँ के वीर सैनिकों में वीरता का खून दौड़ता है, वहाँ की वींरागनाओं ने भी बिना किसी डर के ''जौहर'' करके अपने असीम त्याग का परिचय दिया है।शासक व सामन्तशाही के विरूद्ध इस दौहरी लड़ाई में राजस्थान की महिलाऐं भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता की मशाल थामे रहने में सहभागिनी रही।राजस्थान में समाज का सबसे पीड़ित अंग महिलाऐं रही है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी पीड़ा व कष्ठ की कहानी बयान करते हैं। राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के अक्षुण रखने में, सामन्तीय शक्ति के नियंत्रण व व्याप्त विलासिता और सामाकि कुरीतियों का प्रभाव प्रत्यक्षतः इन महिलाओं पर दृष्टिगोचर हुआ है।किसी भी संगठन को खड़ा करने में, उसके उद्देश्यों की प्राण प्रतिष्ठा फलीभूत करने में कई शक्तियों का हाथ होता है।

यह कार्य बिना कर्मनिष्ठ व समर्पित कार्यकर्ताओं के नहीं हो सकता। राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम में हमारी वीरांगनाओ ने जेल जाकर, लाठिया खाकर, अपमान व अत्याचार सहकर अपने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग देकर एक कर्मठ व सक्रिय कार्यकर्ता की भूमिका निभाई।समीक्षागत काल में प्रकाषित समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेखों की राजस्थान की नारी चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय आंदोलन व नारी जागृति में राजस्थान की महिलाओं को व्यक्तिगत भूमिकाओं को संग्रहित तथ्यों के आधार पर रेखांकित करके उनके महत्वता को ध्वनित किया गया है।

परिचयात्मक शोध का उद्देश्य

हम इन पुरानी स्मृतियों के अंकन में समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं, परन्तु स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरणादायी संस्मरण व कार्य राष्ट्रीय सम्पत्ति है और उनके त्याग, बलिदान व वीरता से परिपूर्ण कार्यो को इतिहास में स्थान दिलाना ही इस शोध का तुच्छ उद्देश्य है।विषम परिस्थितियों में भी स्वयं को संघर्षरत रखने वाली वीरांगनाओं को विस्मृत करना तर्क संगत नही है।

देश की युवतियों व किशोरियों को इन ललनाओं से परिचित कराना आवश्यक है ताकि उनके त्याग व संघर्षमय जीवन से उनमें भी देश भक्ति की भावना जागृत की जा सके। जो स्वतंत्रता के उपरांत क्षीण हो गई है। इस देश भक्ति की भावना को बलवत करने के लिए हमें प्रयत्नशील होना चाहिए। क्योंकि जितना त्याग, तपस्या व बलिदान देश की स्वतंत्रता के लिए आवश्यक था, उससे दस गुणा अधिक त्याग, तपस्या व बलिदान की आवश्यकता देश के लिए उसे समृद्ध व शक्तिशाली बनाने के लिए उपेक्षित है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

वैदिक कर्म काण्डों की जटिलताओं के कारण उत्तर वैदिक काल में इनकी धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियाँ प्रतिबन्धित होने लगी। मनुस्मृति में लिखे स्त्रियों के प्रतिबंध व्यवहारिक रूप से दृष्टिगोचर होने से स्त्रियों का पतन इस काल में प्रारंभ हो गया।मध्यकाल का समाज

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भोग विलास, बहु विवाह, पर्दा–प्रथा जैसी कुरीतियों से लिप्त होने के कारण स्त्रियां वैमनस्य, राजनैतिक व सामाजिक प्रतिदण्ड का कारण बन अपमानित हुई।स्त्री केवल माता के रूप में ही सम्मानित रह गई। मध्यकाल में आरम्भ हुई सती प्रथा ने कालांतर में मनुस्मृति के कथन ''यत्र नर्यास्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' को समाज में अव्यवहारिक बना दिया।

प्रत्येक क्षेत्र में नारी की स्थिति का कारण सहित तुलनात्मक वर्णन द्वारा उन्नींसवीं शताब्दी के आरम्भ में स्त्रियों की बद से बदतर होती दशा पर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

विजय सिंह पथिक, माणिक्यलाल वर्मा, राजनारायण चौधरी, दुर्गाप्रसाद जैसे सक्रिय नेताओं के आंदोलन में सहभागी रही राजस्थान की नारियां पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में अपना स्थान नहीं बना पाई है। इसी उद्देश्य से नारायणी देवी वर्मा, अंजना देवी चौधरी, विमला देवी, दुर्गा देवी व तुलसी की क्षेत्रीय आंदोलन में सक्रियता को मुख्य रूप से वर्णित किया गया है।नीमूचाणा काण्ड स्त्रियों द्वारा सहे अत्याचार व अपमान का विस्तृत अध्ययन स्त्रियों की सहभागिता की महत्वता को दर्शाता है। साथ ही यह सिद्ध किया गया है कि स्वाधीनता संग्राम की कहानी रियासतों के जन आंदोलन की कोख से पैदा हुई।भील आंदोलन की पृष्ठभूमि व कारण सहित परिचय के बाद रिपयर्स द्वारा कुचलने के प्रयास का वर्णन किया गया है।

मुख्य सुधारक गोविन्द गुरू के अतिरिक्त एकी आंदोलन (जागीरदार को किसी प्रकार का कर न देने का आंदोलन) में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व को रेखांकित किया गया है।

रूढ़िवादी व संकचित समाज के सदस्य होने के उपरान्त भी राजस्थान की नारियाँ जागीदारी व शाही सामन्त व्यवस्था के विरूद्ध अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का वहन करते हुए पूरे परिवार सहित इस यज्ञ में कूद पडी।पुरूषों की प्रेरणा स्त्रोत के रूप में अंजना देवी, नारायणी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

दवी वर्मा, इंदू सुखाड़िया, रतन शास्त्री, गीरजा देवी व महिमा देवी द्वारा की गई सत्याग्रह जेल यात्रा व सहे अत्याचारों को राज्य अभिलेखागार बीकानेर में प्रदर्शित प्रदर्शनी (26.02.97 से 04. 03.97) तथा मूल दस्तावेंजो की सहायता से वर्णित किया गया है।अप्रत्यक्ष रूप से महिलाओं ने प्रेरणा लेख, क्रांतिकारी सामग्री एकत्रित करना, महिलाओ में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करना जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Altekar, Dr. A.S: 1981 "Position of Women in Hindu Civilization", Published, New Delhi.
2. Balehatchet, K.A: 1957 “Social Policy and Social Change in W. India, Oxford 1957.
3. Beg, Ali Tara: 1976 “Indias Women Power, Delhi.
4. Berreman, G.D.: 1982 Hindus of the Himalayas:Ethnography and Change, Berkely:University of Californial : Routledge .
5. Boileau, Lt. A.H.E. : 1835 “Personal narratives of Tour Through the Western States of Rajawara”